केनोपनिषद्

यह उपनिषद सामवेदीय "तलवकार ब्राह्मण" का नवां अध्याय है। इस उपनिषद का प्रारम्भ प्रश्न "केन इषितं....." (यह जीवन किसके द्वारा प्रेरित है ?) से हुआ है। इसीलिए इसको केन उपनिषद कहा गया। इस उपनिषद में ब्रह्म के स्वरुप, उसकी अनुभूति के लिए आवश्यक साधनों का वर्णन है।

प्रश्न

ॐ केन इषितं पतति प्रेषितं मनः। केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः।

केन इषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति।।

यह मन किसके द्वारा इच्छित और प्रेरित होकर अपने विषयों की ओर जाता है? किससे प्रेरित होकर यह प्राण चलता है? किसके द्वारा प्रेरित की हुई वाणी को मनुष्य बोलते हैं? कौन देव नेत्रों और कानो को देखने व सुनने के लिए प्रेरित करता है?

उत्तर

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः।
चक्षुषःचक्षु अतिमुच्य धीराः प्रेत्य अस्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

जो कान का कान, मन का मन और वाणी का वाणी है वही प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु है अर्थात जो सबका कारणभूत तत्व है उसे जानकर धीर पुरुष (जो चक्षु, कान, मन आदि के आवेगों से उद्वेलित नही होते) संसार से मुक्त होकर अमर हो जाते हैं।

ब्रह्म की अज्ञेयता

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथ एतद् अनुशिष्यात् अन्यदेव तत्विदितादथो अविदितादधि। इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नः तत् व्याचचक्षिरे।।

उस ब्रह्म तक नेत्र, वाणी आदि इन्द्रियाँ नहीं जाती और मन भी नही जाता। उसे बुद्धि से भी नही जाना जा सकता क्योंकि वह ज्ञात और अज्ञात सभी तत्वों से परे है। ऐसा हमने पूर्व पुरुषों से सुना है जिन्होने हमें उसके बारे में बताया है।

ब्रह्म की अज्ञेयता

यद्वाचान् अभ्युदितं येन वाग् अभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यद् इदम् उपासते।।

जो वाणी से प्रकाशित नही है किन्तु जिससे वाणी प्रकाशित होती है उसी को तू ब्रह्म जान। वाणी द्वारा निरुपित जिस तत्व की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

ब्रह्म की अज्ञेयता

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यद् इदम् उपासते।।

जिसका मन से मनन नही किया जा सकता बल्कि मन जिसकी महिमा से मनन करता है उसी को तू ब्रह्म जान। मन द्वारा निरुपित जिस तत्व की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

ब्रह्म की अज्ञेयता

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूँषि पश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यद् इदम् उपासते।।

जिसे नेत्र के द्वारा नही देखा जा सकता बल्कि नेत्र ही जिसकी महिमा से देखने मे सक्षम होता है उसी को तू ब्रह्म जान। नेत्र द्वारा दृष्टव्य जिस तत्व की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

ब्रह्म की अज्ञेयता

यच्छ्रोत्रेण न श्रृणोति येन श्रोत्रमिदँश्रृतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यद् इदम् उपासते।।

जिसे कान से नही सुना जा सकता बल्कि कान ही जिसकी महिमा से सुनने में सक्षम होता है उसी को तू ब्रह्म जान। कान द्वारा सुने गए जिस तत्व की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

ब्रह्म की अज्ञेयता

यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यद् इदम् उपासते।।

जो प्राण (श्वांस) के द्वारा प्रेरित नही होता बल्कि जिसकी महिमा से प्राण प्रेरित होता है उसी को तू ब्रह्म जान। प्राण शक्ति से क्रियाशील जिस तत्व की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नही है।

आचार्य का कथन

यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेव अपि नूनम्। त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रुपं यदस्य त्वं यदस्य देवेषु अथ नु मीमाँस्यमेव ते मन्ये विदितम्।।

यदि तू ऐसा मानता है कि मै ब्रह्म को अच्छी प्रकार जान गया हूं तो निश्चय ही तू ब्रह्म का थोडा सा ही रुप जानता है। इसका जो रुप तू जानता है और जो रुप देवताओं को विदित है वह भी अल्प ही है। अतः तेरे लिए ब्रह्म विचारणीय ही है।

शिष्य का उत्तर

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नः तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च।।

मै न तो यही मानता हूं कि ब्रह्म को अच्छी प्रकार जान गया और न यही समझता हूं कि उसे नही जानता इसलिए मै उसे जानता भी हूं और नही भी जानता। हम शिष्यों में जो इस प्रकार उसे विदित और अविदित से अन्य जानता है, वही जानता है।

ऋषि का कथन

यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।।

ब्रह्म जिसको ज्ञात नही है उसी को ज्ञात है और जिसको ज्ञात है उसको ज्ञात नही है– अर्थात जो यह मानता है कि वह ब्रह्म को नही जानता, वह ब्रह्म को जानता है

और जो यह मानता है कि वह ब्रह्म को जानता है वह उसे नही जानता क्योंकि जानने का अभिमान करने वालों के लिए वह ब्रह्म जाना हुआ नही है और जानने के अभिमान से रहित व्यक्ति के लिए ही वह जाना हुआ है।

ऋषि का कथन

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।।

वह बोध जिसके द्वारा प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है वही ब्रह्म है – यही आत्म ज्ञान है। आत्म ज्ञान से बल (सामर्थ्य) प्राप्त होता है और ब्रह्म विद्या से अमृतत्व प्राप्त होता है।

ऋषि का कथन

इह चेद वेदीद् अथ सत्यमस्ति न चेद इहवेदीन् महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्य अस्माल्लोकात् अमृता भवन्ति।।

जिसने इसी जन्म में ब्रह्म को जान लिया तो उसने सत्य प्राप्त कर लिया (लक्ष्य पा लिया), जो इस जन्म में ब्रह्म को नही जान पाया उसने अमूल्य अवसर गंवाकर अपनी बडी भारी हानि की। धीर पुरुष प्रत्येक प्राणी में और प्रत्येक तत्व में उस ब्रह्म को व्याप्त जानकर इस लोक से जाकर अमर हो जाते हैं।

तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाँगानि सत्यमायतनम्।।

उस ब्रह्म को प्राप्त करने के आधार तप, दम व कर्म ही हैं। वेद – वेदाँग में वर्णित इस ब्रह्म विद्या का आयतन सत्य है।

तप = शरीर, इन्द्रियों और मन का नियन्त्रण

दम = विषयों से निवृत्त होना

कर्म = आसक्ति रहित श्रेष्ठ कर्म

सत्य = वाणी, मन और विचार की अकुटिलता

यो वा एतामेवं वेदापहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति।।

इस ब्रह्म विद्या के रहस्य को समझने वाला साधक अपने समस्त पापों को विनष्ट कर अविनाशी, असीम एवं सर्वश्रेष्ठ स्थिति में पहुँच जाता है अर्थात परम धाम को प्राप्त कर लेता है।